स्वाध्याय एवं सतसंग की युगानुकुल व्यवस्था

युग निर्माण योजना– क्या है?
धरती पर र्स्वग का अवतरण– कैसे?
मनुष्य में देवत्व की उत्पत्ति द्वारा– कैसे?
मनुष्य में देवत्व की उत्पत्ति हेतू, प.पू.गुरूदेव ने युग निर्माण सत्संकल्पों की स्थापना की है।
उन्ही सत्संकल्पों मे तीसरा संकल्प है–

"मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाऐं रखने के लिए
स्वाध्याय एवं सतसंग की व्यवस्था बनाऐं रखेंगे।"

अतः वेब स्वाध्याय – स्वाध्याय एवं सतसंग की युगानुकुल व्यवस्था ही है।

स्वाध्याय का शब्दार्थ है – अपने आप का अध्ययन–
यह कार्य शिक्षित परिजन शास्त्रों के नियमित अध्ययन द्वारा संपन्न करते है।
शास्त्र उन ग्रंथों को कहते हैं, जो आत्म सत्ता और उसकी महत्ता का बोध कराऐं।
कर्तव्य पथ की जानकारी एवं प्रेरणा प्रदान करें।

वेब स्वाध्याय तकनीकी क्षेत्र मे, वाईस कान्फ्रेंसिंग की प्रचलित परंपरा का स्वाध्याय हेतू सदूपयोग ही है। वाईस कान्फ्रेंस में एक ही फोन नम्बर पर, एक से अधिक लोग, फोन कर के, आपस में बातचीत कर सकते है।

सामान्यतः एक नम्बर पर यदि कोई फोन चालु हो, तो दूसरे को फोन व्यस्त मिलता है, किन्तु कान्फ्रेंस एक ऐसी तकनीक है जिसमे एक से अधिक फोन कॉल को, आपस में कनेक्ट किया जाता है। कारपोरेट जगत मे यह तकनीक मीटिंग हेतू उपयोग मे लायी जाती है।

वेब स्वाध्याय का जन्म, तब हुआ जब, 08 मार्च 2008 के दिन, नारी जागरण वाहिनी (अमेरिकी गायत्री परिवार की बहनों का संगठन) ने वाईस कान्फ्रेंस की मिटिंग मे यह निर्णय लिया की हम प्रतिदिन, इसी माध्यम से स्वाध्याय करेंगे।
जब इस माध्यम से मिटिंग हो सकती है तो स्वाध्याय क्यो नही ?
क्यों न हम इस माध्यम को सतसंग का स्त्रोत बनाऐ।
...और फिर यात्रा आज तक अनवरत यज्ञीय भाव से चल रही है। परिणाम यह है कि आज वेब स्वाध्याय के 8 ग्रुप उम्र, भाषा, कार्य, क्षेत्र के आधार पर सक्रिय है।

आप दुनिया के किसी भी कोने मे क्यो न हों, यदि आप वहां से अपने सगे संबंधियों से फोन द्वारा या इंटरनेट द्वारा संपर्क कर सकते है, तो इसी प्रकार से वेब स्वाध्याय भी अपने सगे संबंधियों से सतसंग हेतू संपर्क ही तो है। निश्चित ही आप इसका लाभ ले सकते है।

- वेब स्वाध्याय कुछ देशों के लिए फोन न0 प्रदान करता है। उदा0 – अमेरिका हेतू – 201.793.9022 इस नम्बर को डॉयल करके रूम नम्बर 3759750 प्रदान किया जाता है इस प्रकार आप रूम मे प्रवेश कर सकते है।

- जिस देश के लिए फोन नम्बर उपलब्ध नही है वे परिजन कम्प्यूटर के माध्यम से कान्फ्रेंस रूम

•

वेब स्वाध्याय के मॉडरेटर के पास यह जानकारी कम्प्यूटर पर दिख जाती है कि रूम मे कौन कौन है। सामान्य व्यक्ति को यह जानकारी मिल सकती है, कि कितने लोग रूम मे है। अन्य जानकारी भी कुछ कमांड द्वारा व्यक्ति को मिल सकती है। यदि आपके घर मे शोर हो तो आप अपनी लाईन भी बंद कर सकते है। शेष सभी प्रकार की जानकारी व्यक्ति को भावनाशील तथा आत्मीय भाव से अन्य परिजन सिखा देते है।

•

वेब स्वाध्याय की सर्वाधिक सहजता यही है कि आपको तैयार नही होना है साथ ही यातायात का समय भी नही लगना है क्योंकि इसके लिए किसी विशेष पुस्तकालय अथवा किसी पीठ मे जाने की आवश्यकता नही है। किन्तु सतसंग का लाभ ही लेना है। वसुंधैव कुटुम्भकम का लाभ मिलना ही है।

आप घर पर कार्य करते हुए, सफाई करते हुए, भोजन बनाते हुए, कपड़े सम्भालते हुऐ, आफिस में, यात्रा के दौरान, कहीं भी वेब स्वाध्याय द्वारा सतसंग का लाभ ले सकते है।

• सतत् स्वाध्याय ने 5 के जिज्ञासा नाम से प्रचलित कोर्स को जन्म दिया।
• जन्मशताब्दी वर्ष मे अखण्ड रामायण पाठ की पृष्ट भुमी पर अखण्ड वेब स्वाध्याय में 24 घण्टे का स्वाध याय किया। जिसमे परिजनों की भागीदारी ऑस्ट्रेलिया से अमेरिका तक सतत् चलती रही। यह क्रम प्रचलित पाठ से भिन्न रहा, यह स्वाध्याय के दर्शन पर आधारित रहा जिसमें 24 घण्टे आत्म चिंतन मनन का क्रम भी सतत् अपनाया गया।
• अमेरिका के 5 विभिन्न स्थानों पर रहते हुऐ सभी का सामुहिक पुंसवन संस्कार वेब स्वाध्याय के माध्यम से संपन्न हुआ। यह उपलब्धि इस तकनिकि व्यवस्था का अप्रतिम उपहार ही तो है। परिजनों का जन्मदिवस, विवाहदिवस एवं पुंसवन संस्कार वेब स्वाध्याय के माध्यम से सफलता पुर्वक नियमित संपन्न कराये जाते है।
• मॉडरेटर का रोल अपनाते हुए साथ ही स्वाध्याय की चर्चा मे भाग लेते हुए सदस्यों का व्यक्तित्व परिष्कार हो रहा है। सदस्यों के परिवार के सदस्य भी प्रायः चर्चा मे आते जाते सुन ही लेते है जिससे परिवार निर्माण का कार्य भी सूक्ष्म स्तर पर हो ही रहा है।
• वेब स्वाध्याय की अब तक की यात्राओं मे परम पुज्य गुरूदेव के साहित्य मे से व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण ,बाल निर्माण, समाज निर्माण, नारी सशक्तिकरण युवा मार्ग दर्शन , स्वास्थय मनोविज्ञान , दर्शन शास्त्र ,महापुरूषों /विदुषी के जीवन चरित्र संस्कारों , त्यौहारों एवं आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन किया है।
• अपनी अब तक की बाल्यावस्था की यात्रा में वेब स्वाध्याय ने अनवरत स्वाध्याय करते हुऐ लोगों के घर के दरवाजे नही खटखटाऐं वरन परिजनों के ह्रदय मे ही प्रवेश किया है।

डॉ.विजय भटकर – पद्मश्री, परम सुपर कम्प्यूटर 2000 के आर्किटेक्ट
'' वेब स्वाध्याय टेक्नोलॉजि का सर्वोत्तम उपयोग है। ''
श्री बी.एन.गोयल – निर्देशक(से.नि.) ऑल इंडिया रेडियो(ए.आई.आर.)
'' यह कार्यक्रम अपनी नियमितता एवं गुणवत्ता के आधार पर विविध भारती (ए.आई.आर.) के तुलनीय है।''

''बाल निर्माण का साहित्य अध्ययन करने के पश्चात सदस्य आज इस स्थिति मे है कि वे पैरेंटिंग की कक्षाऐं सामाजिक स्तर पर लेना प्रारंभ कर देगें।'' पाठ्यक्रम की रूपरेखा निर्माणाधिन है।

वेब स्वाध्याय को कुम्हार के चाक पर रखे घड़े के समान माना जाता है ।
चाक का लगातार घुमना ''निरंतरता'' का प्रतीक है।
वेब स्वाध्याय मे इस हेतू प्रतिदिन, स्वध्याय का क्रम अपनाने का संकल्प है।
कुम्हार का बाहर से आकार देने वाला हाथ   का प्रतीक है।
वेब स्वाध्याय मे इस हेतू समय सयंम के नियम द्वारा इसका अभ्यास किया जाता है।
कुम्हार का अंदर वाला हाथ   का प्रतीक है।
वेबस्वाध्याय मे इस हेतू सभी परिजनों के जन्मदिन, विवाहदिन एवं पुसवन संस्कार किये जाते है।
स्वास्थय संबंधी जानकारी समय समय पर लेते रहते है।
व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान भी किया जाता है।
... और इस प्रकार वेबस्वाध्याय निरंतरता, नियमितता ,आत्मियता की घुरी पर चलने वाला कार्यक्रम है।

– अखण्ड ज्योति – सितंबर 2011 पेज 48 – क्रांति विशेषांक

'' दूर संचार क्रांति से मनुष्य का जीवन एक नये युग मे पहुंच जायेगा , इसमे कोई संदेह नही है। पर इसमें यदि सांस्कृतिक क्रांति भी जुड़ जाये तो मनुष्य की चेतना भी एक नये आयाम मे पहुंच सकती है।''

अतः वेब स्वाध्याय ने दूर संचार क्रांति से सांस्कृतिक क्रांति का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। जिससे मनुष्य की चेतना एक नये आयाम की ओर अग्रसर है।